THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-01 | April-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.22

भाषा प्रवीणता एंव बोधात्मक पठन की रणनीतियों के मध्य सम्बंध : विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों का विस्तृत अध्ययन

आकांक्षा सिंह[1], डॉ0 राजेंद्र बहादुर सिंह[2]

[1]शोधार्थी, वी0एस0एस0डी0 कालेज कानपुर, छत्रपति शाहू जी महराज विश्वविद्यालय , कानपुर
[2]शोध निर्देशक, असिस्टेंट प्रोफेसर, एम0एड0 विभाग, वी0एस0एस0डी0 कालेज कानपुर, छत्रपति शाहू जी महराज विश्वविद्यालय कानपुर

सारांश :

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में भाषा प्रवीणता को विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता का प्रमुख आधार माना जाता है। विशेषकर अंग्रेजी भाषा में प्रवीणता या दक्षता का विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के समग्र विकास पर तथा उच्च शिक्षा एंव भविष्य के व्यवसायिक अवसरों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बोधात्मक पठन की रणनीतियाँ विद्यार्थियों की पठन प्रक्रिया को सचेत रूप से नियंत्रित करने, बोध विकसित करने और आत्म – नियमन के माध्यम से बेहतर सीखने में सहायक होती है।

इस गुणात्मक अध्ययन का उद्देश्य विद्यालय स्तर के कक्षा–9 एंव कक्षा–10 के विद्यार्थियों में भाषा प्रवीणता एंव बोधात्मक पठन की रणनीतियों के मध्य सम्बन्ध को गहराई से समझना है और यह जानना है कि किस तरह ये दोनो घटक उनकी अध्ययन प्रक्रिया को प्रभावित करते है। इसके लिये इस शोध में कानपुर नगर के ओम सरस्वती विद्या मन्दिर विद्यालय के कक्षा–9 एंव कक्षा–10 के कुल 30 विद्यार्थियों का चयन गैर संभाव्यता नमूना चयन विधि के अर्न्तगत उद्देश्यपूर्ण नमूना पद्धति के द्वारा किया गया। जिसके के लिये अर्ध – संरचित साक्षात्कार, कक्षा – अवलोकन एंव विद्यार्थियों की आत्म – चिंतनात्मक डायरियों के माध्यम से आंकड़े एकत्र किये गये। इस शोध में दो अंग्रेजी भाषा शिक्षकां को भी शामिल किया गया।

इस शोध में थीम आधारित विश्लेषण से यह पाया गया कि उच्च भाषा प्रवीणता वाले विद्यार्थी प्रायः विविध बोधात्मक पठन रणनीतियों जैसे – पाठ का पूर्वानुमान, आत्म – प्रश्न निर्माण, पठन के दौरान स्व–निगरानी तथा पुनरावलोकन का अधिक और प्रभावी उपयोग करते है। लेकिन इसके विपरीत निम्न प्रवीणता वाले विद्यार्थी प्रायः सतही पठन पर निर्भर रहते हैं और बोधात्मक नियंत्रण की क्षमता का प्रदर्शन अपेक्षाकृत कम प्रदर्शित करते हैं।

इस शोध से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय स्तर पर भाषा प्रवीणता और बोधात्मक पठन की रणनीतियों में गहरा सम्बन्ध है। इस अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षकों, पाठयक्रम निर्माताओं एंव नीति–निर्माताओं को यह सकेंत देते है कि विद्यार्थियों मे भाषा प्रवीणता के साथ–साथ बोधात्मक पठन की रणनीतियों का भी सुनियोजित प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है।

मुख्य शब्द :

भाषा प्रवीणता, बोधात्मक पठन,पठन रणनीतियाँ, विद्यालय स्तर, भाषा अधिगम,अध्ययन कौशल

1. प्रस्तावना :

भाषा मनुष्य जीवन का एक मूल आधार है। यह न केवल संचार का माध्यम है बल्कि ज्ञानार्जन, चिंतन और सामाजिक सहभागिता का भी प्रमुख साधन है। शिक्षा के क्षेत्र में क्षाषा का महत्व बहुत अधिक है क्योंकि विद्यार्थियों की समस्त शैक्षिक उपलब्धियाँ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनकी भाषा प्रवीणता पर आधारित होती है। विद्यालय स्तर पर विशेषकर अंग्रेजी भाषा की प्रवीणता, वैश्वीकरण के इस युग में विद्यार्थियों के भविष्य को गहराई से प्रभावित करती है।

भाषा प्रवीणता का आशय किसी व्यक्ति की भाषा का व्यवहारिक उपयोग करने की क्षमता से है। इसमें चार प्रमुख कौशल सुनना,बोलना,पढ़ना एंव लिखना सम्मिलित हैं। जिनमें से पढ़ना या फिर इसे पठन कौशल भी कहते हैं अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकी यह न केवल जानकारी अर्जित करने बल्कि ज्ञान को आत्मसात करने और आलोचनात्मक दृष्टिकोण को विकसित करने में भी सहायक है। भाषा प्रवीणता के लिये यह कह सकते है कि यह केवल व्याकरणिक ज्ञान तक ही सीमित नही है, बल्कि संप्रेषण,विचार अभिव्यक्ति और संदर्भानुसार भाषा के प्रयोग की दक्षता को भी दर्शाती है।

बोधात्मक पठन की रणनीतियों से आशय उन मानसिक प्रक्रियाओं से है जिनकी सहायता से विद्यार्थी अपनी पठन प्रक्रिया की योजना बनाते हैं, उसे संचालित करते है एंव परिणामों का मूल्यांकन करते है। **फ्लेवल** महोदय ने मेटाकॉग्निशन की संकल्पना प्रस्तुत करते हुये कहा है कि व्यक्ति अपने संज्ञानात्मक कार्यकलापों की जागरूकता एंव नियमन करता है। पठन के सन्दर्भ में यह रणनीतियाँ जैसे – पूर्वानुमान, स्व–प्रश्न, निगरानी और सार–संक्षेपण विद्यार्थियों के बोध स्तर को गहरा बनाती हैं।

विद्यालय स्तर के विद्यार्थी वे छात्र हैं जो प्राथमिक, उच्च प्राथमिक या माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत है। विद्यालय स्तर पर यह देखा गया है जिन विद्यार्थियों की अंग्रेजी भाषा प्रवीणता अधिक होती है, वे प्रायः अपनी पठन प्रक्रिया को अधिक प्रभावी ढ़ग से नियंत्रित करते हैं। इसके विपरीत कम प्रवीणता वाले विद्यार्थी सतही पठन पर निर्भर रहते हैं और बोधात्मक पठन की रणनीतियों का प्रयोग भी कम करते हैं। परिणाम स्वरूप उनका पठन बोध सीमित रह जाता है।

वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता इस बात से उत्पन्न होती है कि विद्यालय स्तर पर अक्सर भाषा अधिगम को केवल व्याकरण और शब्दावली तक सीमित कर दिया जाता है। जबकि वास्तविक भाषा अधिगम तब सम्भव है जब विद्यार्थियों को बोधात्मक पठन की रणनीतियों का प्रशिक्षण दिया जाये और उन्हें अपनी पठन प्रक्रिया के प्रति जागरूक बनाया जाये।

2. अध्ययन के उद्देश्य :

1. कक्षा–9 एंव कक्षा–10 के विद्यार्थियों की भाषा प्रवीणता के स्तर का अध्ययन करना
2. विद्यार्थियों के द्वारा पठन प्रक्रिया के दौरान अपनाई जाने वाली रणनीतियों का अध्ययन करना
3. भाषा प्रवीणता एंव बोधात्मक पठन की रणनीतियों के मध्य सम्बंध को अनुभवात्मक स्तर पर अध्ययन करना
4. उच्च एंव निम्न भाषा प्रवीणता वाले विद्यार्थिया के मध्य पठन रणनीतियों के प्रयोग में पाये जाने वाले अंतर का अध्ययन करना
5. विद्यालय स्तर पर भाषा शिक्षण में सुधार के लिये उपयुक्त शैक्षिक सुझाव प्रस्तुत करना

3. साहित्य समीक्षा :

3.1 भाषा प्रवीणता का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

भाषा प्रवीणता का अर्थ केवल शब्दों एंव व्याकरण का ज्ञान नही है, बल्कि इसका आशय भाषा के सभी कौशलों सुनना,बोलना,पढ़ना एंव लिखना इनके संतुलित और प्रभावी उपयोग से है। **कमिंस** ने इसे दो स्तरों में विभाजित किया है – बिक्स (बेसिक इंटरपर्सनल कम्युनिकेशन स्किल्स) और कैल्प (कॉग्निटिव अकादमिक लैंग्वेज प्रोफिशिएंसी)। विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के लिये वोकैप का विकास अत्यंत महत्वर्पूण है, क्योकी यह उनकी शैक्षिक उपलब्धि और पठन बोध के प्रारूप को प्रभावित करता है।

3.2 बोधात्मक पठन की रणनीतियों की अवधारणा

''मेटाकॉग्निशन'' शब्द सबसे पहले **फ्लेवल** द्वारा प्रयुक्त किया। इसका तात्पर्य मानव का अपनी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के प्रति जागरूक होने से तथा उनका नियमन करने से है। पठन के क्षेत्र बोधात्मक रणनीतियों का आशय है –

- पढ़ने से पहले पूर्वानुमान लगाना
- पढ़ते समय स्वंय से प्रश्न पूछना
- अर्थ पर निगरानी रखना
- पढ़ने के बाद पुनरावलोकन या सारांश तैयार करना

विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के लिये ये रणनीतियाँ इस लिये महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इस स्तर पर वे केवल पाठय–सामग्री को पढ़ना ही नही सीखते, बल्कि पाठ से अर्थ निमार्ण भी करते हैं

3.3 अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ मे अध्ययन

एल मदनी ईटी एल. (2024), अधिसंज्ञानात्मक जागरूकता और भाषा प्रवीणता के पारस्परिक सम्बंध की पड़तालः मोरक्को के विश्वविद्यालयी ईएफएल छात्रों पर एक अध्ययन, इस अध्ययन में इन्होनें भाषा प्रवीणता और बोधात्मक पठन के मध्य एक मजबूत सकारात्मक सहसम्बंध पाया। इस अध्ययन से यह भी सामने आया कि अधिसंज्ञानात्मक जागरूकता पठन बोध का लगभग 65 प्रतिशत तक अनुमान लगाने में सक्षम है।

एम डी पी आई प्रकाशन (2024), प्राथमिक विद्यालय के विद्याथ्रियों में पठन–बोध मेंथमिक आत्म–नियमन कौशल का विकास : पाठ–बोध, रणनीति उपयोग एंव आत्म–प्रभावकारिता पर प्रभाव, यह अध्ययन प्राथमिक कक्षा के छात्रों में पढ़ने की समझ में खुद – नियमन कौशल पर केन्द्रित है। इसमें संज्ञानात्मक, अधिसंज्ञानात्मक,प्रेरणादायक रणनीतियों का प्रयोग किया गया है, जैसे कि योजना बनाना, स्व–निगरानी, स्व–मूल्याकंन आदि। इस शोध से यह पता चलता है कि रणनीतियों पर आधारित कार्यक्रमों ने पढ़ने की क्षमता और रणनीति उपयोग पर बढ़ावा दिया है।

लेवचीक ईटी एल. (2022), अधिसंज्ञानात्मक पठन रणनीतियों का मास्टर स्तर के ईएफएल छात्रों पर पठन प्रवीणता और अकादमिक उपलब्धि पर प्रभाव, इस अध्ययन में यह पाया गया कि अधिसंज्ञानात्मक रणनीतियों का प्रयोग विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है।

भारतीय संदर्भ में अध्ययन

जीवरत्नम और स्टापा (2022), माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भाषा प्रवीणता और अधिसंज्ञानात्मक रणनीतियों के प्रयोग के बीच संबन्ध, इस अध्ययन में यह देखा गया कि उच्च प्रवीणता वाले छात्र इन रणनीतियों का प्रयोग अधिक करते है

एंव निम्न प्रवीणता वाले छात्रों द्वारा रणनीतियों का प्रयोग अपेक्षाकृत कम किया जाता है। इससे पता चलता है कि भाषा प्रवीणता और अधिसंज्ञानात्मक रणनीतियों का प्रयोग सकारात्मक रूप से सहसंबद्ध है।

नाथ (2022), माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में योजनाबद्ध शिक्षण हस्तक्षेप का अधिसंज्ञानात्मक जागरूकता पर प्रभाव, इस अध्ययन में जब छात्रों को योजनाबद्ध तरीके से अधिसंज्ञानात्मक रणनीतियों का अभ्यास कराया गया तो उनकी स्व चेतना में उल्लेखनीय सुधार हुआ। यह सुधार विशेष रूप से उन छात्रों में देखा गया जो प्रारंभिक स्तर पर अपेक्षाकृत कमजोर थे। इससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय स्तर पर भी अधिसंज्ञानात्मक शिक्ष्ण हस्तक्षेप से सिखने की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है।

द्रविडमणि (2016), अधिसंज्ञानात्मक पठन रणनीतियों का विश्वविद्यालय स्तर के ईएसएल विद्यार्थियों के पठन बोध पर प्रभाव, अधिसंज्ञानात्मक पठन रणनीतियाँ जैसे योजना बनाना,निगरानी करना,आत्म–मूल्यांकन आदि का प्रयोग करने वाले छात्र पठन बोध में उल्लेखनीय रूप से बेहतर प्रदर्शन करते है। यह शोध इस बात को स्थापित करता हे कि अधिसंज्ञानात्मक पठन रणनीतियाँ उच्च शिक्षा स्तर पर भाषा सीखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

4. शोध पद्धति :

4.1 शोध दृष्टिकोण

यह अध्ययन गुणात्मक शोध दृष्टिकोण पर आधारित है। गुणात्मक शोध का उद्देश्य मात्र आकड़े एकत्र करना नही है, बल्कि विद्यार्थियों के अनुभव, विचार, धारणाओं और व्यवहार को गहराई से समझना है। चूँकि अध्ययन का मुख्य उद्देश्य **"भाषा प्रवीणता एंव बोधात्मक पठन की रणनीतियों के मध्य सम्बंध को विद्यालय स्तर पर समझना"** इसलिये यहा पर गुणात्मक पद्धति सबसे उपयुक्त है।

4.2 शोध की रूपरेखा

इस अध्ययन में केस स्टडी पद्धति का प्रयोग किया गया है। केस स्टडी पद्धति के माध्यम से चुने गये ओम सरस्वती इंटर कॉलेज के कक्षा 9 एंव कक्षा 10 के चुने गये 30 विद्यार्थियों की भाषा प्रवीणता और पठन की रणनीतियों की वास्तविक स्थितियों का सूक्ष्म एंव विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

4.3 शोध स्थल

यह अध्ययन कानपुर नगर में स्थित इंटर कॉलेज(कक्षा 9 एंव 10) में संपन्न किया गया जहाँ शिक्षा प्रदान करने का माध्यम अंग्रेजी भाषा थी। विद्यालय का चयन उद्देश्यपूर्ण नमूना चयनविधि के द्वारा किया गया, कयोंकि वहा पर विविध सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से विद्यार्थी आते है और यह शोध के उद्देश्यों के अनूरूप था।

4.4 प्रतिभागी

अध्ययन में कुल 30 विद्यार्थी (कक्षा 9 से 15 एंव कक्षा 10 से 15) को शामिल किया गया।

- आयु सीमा : 14 से 16 वर्ष
- पृष्ठभूमि : मिश्रित (ग्रामीण एंव शहरी)
- भाषा स्थिति : अधिकांश विद्यार्थियों की मातृभाषा हिन्दी थी,जबकि शिक्षा अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रदान की जा रही थी।
- इस अध्ययन में दो अंग्रेजी भाषा शिक्षकों को भी शामिल किया गया ताकि विद्यार्थियों के पठन व्यवहार और भाषा प्रवीणता पर शिक्षकों के दृष्टिकोण को समझ सके।

4.5 नमूना चयन

इस अध्ययन में उद्देश्यपूर्ण नमूना चयनविधि का प्रयोग करके केवल उन्हीं विद्यार्थियों का चयन किया गया जो –

- नियमित रूप से कक्षा में उपस्थिति दर्ज करते थे।
- अंग्रेजी भाषा में औसत या उससे अधिक क्षमता प्रदर्शित कर रहे थे।
- शोध में भाग लेने के इच्छुक थे।

4.6 डेटा संकलन की तकनीकें

अर्द्ध–संरचित साक्षात्कार

इसके अंतर्गत सर्वप्रथम विद्यार्थियों से उनके नाम, कक्षा एंव पृष्ठभूमि के विषय में जानकारी ली गई। इसके साथ ही उनके अंग्रेजी भाषा सीखने के अनुभव एंव घर पर और विद्यालय में भाषा सीखने के वातावरण के विषय में प्रश्न किये गये जैसे – क्या आप को अंग्रेजी भाषा बोलने,पढ़ने या लिखने अधिक कठिनाई होती है ?, विद्यालय में किस प्रकार की गतिविधियाँ आप की भाषा को बढ़ाने में मदद करती है ?, आप कठिन पाठ को समझनें के लिये कौन–कौन सी रणनीतियाँ अपनाते हैं ?, अध्यापक पठन कौशल विकसित करने के लिये कक्षा में कौन सी विधियाँ अपनाते है ? आदि अन्य कई प्रश्नों के माध्यम से जानकारी एकत्र की गई। शिक्षकों से भी अलग से साक्षात्कार लिये गये ताकि विद्यार्थियों की क्षमताओं पर उनके दृष्टिकोण को समझा जा सके।

कक्षा अवलोकन

इसके अंतर्गत शोधार्थी द्वारा आठ कक्षा सत्रों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया एंव इस बात पर भी ध्यान दिया गया कि विद्यार्थियों द्वारा किस प्रकार पठन गतिविधियों के मध्य विभिन्न रणनीतियों का प्रयोग किया जाता है – जैसे कि जोर से पढ़ना,प्रश्न पूछना,नोटस बनाना, या शब्दकोश का उपयोग करना।

पठन कार्य एंव परावर्तन डायरी

इसमें विद्यार्थियों को एक–एक अंग्रेजी पाठ पढ़ने के लिये दिया गया और उनसे पठन के बाद उस पाठ के विषय में एक छोटा परावर्तन लिखने को कहा गया। इसके माध्यम से उनके पठन बोध एंव अर्थ ग्रहण के विषय में जानकारी एकत्र की गई।

4.7 डेटा विश्लेषण

इस अध्ययन में जो डेटा अर्द्ध–संरचित साक्षात्कार, कक्षा अवलोकन एंव पठन कार्य और परावर्तन डायरी के माध्यम से एकत्र किया गया उसके विश्लेषण के लिये थीमेटिक एनालिसिस पद्धति अपनाई गयी। इसके लिये सभी साक्षात्कार और अवनोकन टिप्पणियों को लिपिबद्ध किया गया। डेटा का बार–बार अध्ययन कर प्रांरभिक कोड बनाये गये एंव समान कोड को मिलाकर व्यापक थीम तैयार की गयी जैसे –

- ''भाषा प्रवीणता और आत्मविश्वास''
- ''रणनीति का चयन और प्रयोग''
- ''शिक्षक की भूमिका''
- ''सीखने की चुनौतियाँ''

अंत में इन थीम्स को शोध उद्देश्यों के साथ जोड़ कर विश्लेषण प्रस्तुत किया गया।

5 परिणाम :

इस गुणात्मक अध्ययन में संकलित डेटा (साक्षात्कार,कक्षा अवलोकन एंव पठन और परावर्तन डायरी) के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि भाषा प्रवीणता और पठन बोध की रणनीतियों के मध्य एक गहरा संबन्ध है। विद्यार्थियों की अंग्रेजी भाषा में दक्षता जितनी अधिक थी, उतनी ही प्रभावी और विविध रणनीतियाँ वे पठन के दौरान अपनाते थे। वहीं जिन विद्यार्थियों की अंग्रेजी भाषा प्रवीणता अपेक्षाकृत कम थी, वे सीमित और सतही रणनीतियों पर निर्भर रहते थे।

5.1 थीम आधारित निष्कर्ष

भाषा प्रवीणता और आत्मविश्वास

अधिकांश विद्यार्थियों ने यह स्वीकार किया कि उनकी भाषा प्रवीणता सीधे उनके आत्मविश्वास को प्रभावित करती है। उच्च प्रवीणता वाले विद्यार्थी बिना झिझक अंग्रेजी पाठ पढ़ते, कठिन शब्दों का अनुमान संदर्भ से लगाते और अर्थ समझने के लिये शिक्षक पर कम निर्भर रहते। निम्न प्रवीणता वाले विद्यार्थी अक्सर शब्द दर शब्द अनुवाद पर निर्भर रहते और कठिनाई आने पर तुंरत पढ़ना रोक देते।

इससे यह स्पष्ट होता है कि भाषा प्रवीणता न केवल समझने की क्षमता बल्कि पठन में दृढ़ता और आत्मविश्वास भी निर्धारित करती है।

पठन रणनीतियों का चयन

अवलोकन एंव जर्नल से यह सामने आया कि विद्यार्थी विभिन्न रणनीतियों का प्रयोग करते है जैसे –

स्किमिंग एंव स्कैनिंग – उच्च प्रवीणता वाले विद्यार्थी मुख्य विचार पहचानने के लिये स्किमिंग का प्रयोग करते।

नोटस बनाना एंव हाइलाइट करना – औसत और उच्च स्तर के विद्यार्थी मुख्य शब्द और वाक्य चिन्हित करते।

शब्दकोश का प्रयोग – निम्न प्रवीणता वाले विद्यार्थी बार – बार शब्दकोश का सहारा लेते है।

सेल्फ – क्वेश्चनिंग – कुछ विद्यार्थियों ने स्वंय से प्रश्न पूछकर पाठ को समझने की रणनीति अपनाई।

शिक्षक भूमिका

शिक्षकों के साक्षात्कार से सामने आया कि वे विद्यार्थियों को पठन गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिये प्रेरित करते है, लेकिन समयाभाव के कारण हर छात्र की व्यक्तिगत रणनीतियों पर ध्यान नही दे पाते। शिक्षक मानते है जो विद्यार्थी अंग्रेजी बोलने और सीखने में सक्रिय रहते है, वे पठन रणनीतियों में भी अधिक दक्ष होते है। कुछ शिक्षक ''गाइडेड रीडिंग'' तकनीक का प्रयोग करते हैं, जिससे कमजोर विद्यार्थी भी रणनीतियाँ सीखते है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों की रणनीति–चेतना विकसित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सीखने की चुनौतियाँ

इसके अतंर्गत विद्यार्थियों ने जिन कठिनाईयों का उल्लेख किया, वे है –

- कठिन शब्दावली और जटिल वाक्य संरचना
- अंग्रेजी को प्रेशर सब्जेक्ट मानना
- पठन के प्रति अरूचि और घर पर अभ्यास की कम

कम प्रवीणता वाले विद्यार्थियों में फियर ऑफ इंग्लिश एक प्रमुख बाधा के रूप में उभरी, जिससे वे पठन रणनीतियों को आत्मसात करने में पीछे रह जाते हैं। यदि विद्यार्थियों को भाषा प्रवीणता विकसित करने के अवसर न मिलें, तो वे प्रभावी रणनीतियाँ अपनाने में कठिनाई महसूस करते हैं।

डेटा विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि भाषा प्रवीणता रणनीति की विविधता और गहराई को प्रभावित करती है। रणनीतियों का नियमित प्रयोग भाषा प्रवीणता को और सुदृढ़ करता है। इस प्रकार यह एक परस्पर सुदृढ़ करने वाला चक्र है।

निष्कर्ष :

इस गुणात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि भाषा प्रवीणता और बोधात्मक पठन की रणनीनियों के मध्य गहरा सम्बंध विद्यमान है। विद्यार्थियों के अनुभवों और अवलोकनों से यह तथ्य सामने आया कि उच्च प्रवीणता वाले विद्यार्थी न केवल पठन सामग्री को शीघ्रता से सीखने में सक्षम होते हैं, बल्कि वे विविध रणनीतियों जैसे सार–निमार्ण,पूर्वानुमान,पुर्नपाठ एंव मुख्य विचार पकड़ना आदि का प्रयोग प्रभावी ढंग से करते हैं। इसके विपरीत निम्न प्रवीणता वाले विद्यार्थियों की रणनीतियाँ सीमित पाई गयीं और वे शब्दांशः पठन तथा शब्दकोश पर अधिक निर्भर रहे। इस अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता कि भाषा प्रवीणता केवल भाषाई क्षमता का प्रश्न नही है,बल्कि यह विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक और भावनात्मक क्षमताओं से भी गहराई से जुड़ी है। उच्च प्रवीणता विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और सीखने की सकारात्मक प्रवृति उत्पन्न करती है,जबकि निम्न प्रवीणता भय और हिचक का कारण बनती है। अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि रणनीति–आधारित पठन अभ्यास विद्यार्थियों की प्रवीणता को विकसित करने का एक महत्वपूर्ण साधन हो सकता है।

समग्र रूप से इस शोध का प्रमुख निष्कर्ष यह है कि विद्यालय स्तर पर अंग्रेजी भाषा शिक्षण को केवल व्याकरण एंव शब्दावली तक सीमित नही रखना चाहिये बल्कि विद्यार्थियों को रणनीतिक पठनकर्ता बनाने की दिशा में कार्य करना आवश्यक है। इस दिशा में शिक्षक की सक्रिय भूमिका, सहपाठियों के साथ सहयोगात्मक अधिगम तथा विद्यालयी वातावरण अत्यंत निर्णायक कारक सिद्ध हो सकते है।

अतः यह अध्ययन यह संदेश देता है कि भाषा प्रवीणता और पठन रणनीतियाँ एक–दूसरे की पूरक हैं और इनका संयुक्त विकास विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन को अधिक सशक्त एंव प्रभावी बना सकता है।

संदर्भ

- बेकर,एल.,और ब्राउन,ए.एल.(1984). *मेटाकॉग्निटिव कौशल और पठन.* पी.डी.पियर्सन(संपा.),हैंडबुक ऑफ रीडिंग रिसर्च(पृ.353–394)।
- जॉनसन,पी.(1988). *स्नातक अंतर्राष्ट्रीय छात्रों की अंग्रेजी भाषा प्रवीणता एंव शैक्षिक प्रर्दशन.*टीईएसओएल त्रेमासिक,22(1),164–168https://doi.org/10.2307/3587070
- कैरेल,पी.एल.(1989). *मेटाकॉग्निटिव जागरूकता और दूसरी भाषा पठन.* द मॉडर्न लैंग्वेज जनर्ल,73(2),121–134। https://doi.org/10.1111/j.1540-4781.1989.tb02534.x
- ऑक्सफोर्ड,आर.एल.(1990). *लैंग्वेज लर्निंग स्ट्रैटेजीजःव्हाट एवरी टीचर शुड नो.* न्यूयॉर्कः न्यूबरी हाउस।
- *चमोट,ए.यू.,एंव ओ मल्ले,जे.एम.(1994).द कॉल्ला हैंडबुकः इम्प्लीमेंटिंग द कॉग्निटिव एकेडमिक लैंग्वेज लर्निंग एप्रोच.* रीडिंग,एमएः एडिसन–वस्ले।
- प्रसेल,एम.,एंव अफलबार्च, पी.(1995). *वर्बल प्रोटोकॉल्स ऑफ रीडिंग इा नेचर ऑफ कंस्ट्रक्टिवली रिस्पॉन्सिव रीडिंग.*हिल्सडेल,एन.जेः लॉरेंस अर्लबाम एसोसिएटस।
- राष्ट्रीय पठन पैनल.(2000). *बच्चों को पढ़ना सिखानाः पठन पर वैज्ञानिक शोध साहित्य का साक्ष्य – आधारित मूल्यांकन और पठन शिक्षण पर इसके निहितार्थ*

- एंडरसन,एन.जे.(2002). *दूसरी भाषा शिक्षण और अधिगम में मेटाकॉग्निशन की भूमिका.* वॉशिंगटन,डी.सी. :ईआरआइसी क्लियरिंगहाउस ऑन लैंग्वेजेज एंड लिंग्विस्टिक्स।
- कोडा,के.(2005). *दूसरी भाषा पठन में अंतर्दृष्टियाँ: एक क्रॉस – लिंग्विस्टिक दृष्टिकोण.* कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- डयूक,एन.के.,पियर्सन,पी.डी.(2009). *पठन बोध विकसित करने के लिये प्रभावी अभ्यास* जर्नल ऑफ एजुकेशन।
- योगुर्टचु,के.(2013) *आत्म. प्रभावकारिता की धारणा का पठन.बोध एंव शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव*। प्रोसीडिया–सोशल एंड बिहेवियरल सांइसेज, 70,375–386 https://doi.org/10.1016/jsbspro.2013.01.075
- हिज्जी,डी.(2018) *विद्यार्थीयों की बोधात्मक पठन क्षमता एंव अंग्रेजी में उनकी उपलब्धि के मध्य सम्बंध*। यूएस–चाइना. विदेशी भाषा, 16(3), 114–125 https://doi.org/10.17265/1539-808/2018.03.002
- फिलिप्स गैलोव,ई.,उकेली, पी.(2019) *बोधात्मक पठन से परे: प्रारम्भिक किशोर के लिखित सारांशों में मुख्य शैक्षिक भाषा के अतिरिक्त योगदान की खोज*। रीड राइट 32,729–759 https://doi.org/10.1007/s11145-018-9880-3
- गालाजिया, टी.जे.एल.(2020) *विद्यार्थीयों की बोधात्मक पठन, समस्या समाधान कौशल और शैक्षिक प्रदर्शन.* जर्नल आफ वल्ड इंग्लिशेज एंड एजुकेशनल प्रैक्टिसेज, 2(4), 1–15 https://www.jeeps.org
- लारेंस,जे.एफ.,क्राफ,ऐ.आर.,मैकलार्थ,ए.,कुलैज,पी.ए.,फ्रांसिस,डी.जे.,(2021) *बोधात्मक पठन एंव शैक्षिक शब्दावली: आइटम विशेषताओं और पठन प्रवीणता के सम्बंधों की खोज.* पठन शोध त्रैमासिकए 57(2),669–69 https://doi.org/10.1002/rrq.434
- पीटस,के.एफ.,यिम,ओ. और बायलिस्टोक,ई.(2022) *द्विभाषी बच्चों मे भाषा प्रवीणता, बोधात्मक पठन एंव गृह साक्षरता: संदर्भ का प्रभाव* / इंटरनैसट जर्नल आफ बाइलिंगुअल एजुकेशन एंड बाइलिंगुअलिज्म, 25(1),22 https://doi.org/10.1080;13670050.2019.1677551
- आर्टेगा.डेला क्रूज,आर.,एंव लोपेज,एम.के.आर.आर.(2022) *जूनियर हाई स्कूल के छात्रों का बोधात्मक पठन एंव मौखिक अंग्रेजी भाषा प्रवीणता बढ़ाने में गैलरी वाक तकनीक* / वाइकाटो जर्नल आफ एजुकेशन, 27(3),57–71 https://doi.org/10.15663/wje.v27i3.813
- इजतुल्लाह,स.नासिर,र.,एंव गुल,फ.(2022) *उच्च शिक्षा संस्थानों के विद्यार्थीयों की अंग्रेजी भाषा प्रवीणता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बंध का अध्ययन* / ग्लोबल एजुकेशनल स्टडीज रिव्यू,7(1),149–158 https://doi.org/.1031703/gesr.2022(7-1)
- अल्कुराशी,एन.(2024) *ईएफएल विद्यार्थीयों में भाषा प्रवीणता एंव पठन चिंता का पठन बोध पर प्रभाव: प्रमुख योगदान कारकों और निहितार्थों का विश्लेषणात्मक अध्ययन* / जनर्ल आफ लैंग्वेज एंड लिंग्विस्टिक स्टडीज,20(2) https://jlls.org

Cite this Article:

आकांक्षा सिंह1, डॉ0 राजेंद्र बहादुर सिंह," भाषा प्रवीणता एंव बोधात्मक पठन की रणनीतियों के मध्य सम्बंध: विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों का विस्तृत अध्ययय" The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp-176–183,Volume-05, Issue-01, April-2026, https://theresearchdialogue.com/This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

आकांक्षा सिंह[1], डॉ0 राजेंद्र बहादुर सिंह[2]

For publication of Research Paper title

भाषा प्रवीणता एंव बोधात्मक पठन की रणनीतियों के मध्य सम्बंध : विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों का विस्तृत अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-01, Month April, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.22